संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री विजय महादेव गाडे द्वारा प्रस्तुत 'गोपालदास सक्सेना 'नीरज' के काव्य की चतुःसूत्री का मूल्यांकन' यह लघु-शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : सातारा

तिथि : १८।६।03

डॉ. भरत सगरे
हिंदी विभाग
लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा

L. B. S. COLLEGE SATARA

प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज,
सातारा
प्राचार्य
लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा

डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शाह
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
मुधोजी महाविद्यालय, फलटण।

प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री विजय महादेव गाडे ने मेरे निर्देशन में 'गोपालदास सक्सेना 'नीरज' के काव्य की चतुःसूत्री का मूल्यांकन' यह लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए बड़े परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही तथा मौलिक हैं। शोध-छात्र के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ।

स्थान : फलटण

तिथि : 27 जून, 2003

(डॉ. राजेंद्र शाह)
शोध-निर्देशक

प्रा. गाडे विजय महादेव
हिंदी विभाग प्रमुख,
बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय,
भिलवडी, ता. पलुस, जि. सांगली.

प्रव्यापन

"गोपालदास सक्सेना 'नीरज' के काव्य की चतुःसूत्री का मूल्यांकन"

यह शोध प्रबंध मेरी मौलिक रचना है जो एम. फिल के लघुशोध प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है! यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है!

सातारा

दि. २६|८|०३

प्रा. गाडे विजय महादेव

अनुसंधाता

0-0-0-0-0

भूमिका

बचपन से ही मुझे कविता के प्रति लगाव था। एम. ए. का अध्ययन करते समय मैंने आधुनिक हिंदी कवियों का अध्ययन किया था। आधुनिक काव्य का अध्ययन करते समय मैंने गोपालदास सक्सेना 'नीरज' की कविताओं का विधिवत अध्ययन किया। पाठ्यपुस्तक का नाम था 'आज के लोकप्रिय कवि 'नीरज' सं. क्षेमचंद 'सुमन'। अतः उस सनय से नीरज जी मेरे मन एवं मस्तिष्क पर इस कदर छाए थे कि मैंने नीरज जी पर ही अनुसंधान करने का निश्चय किया! संजोग से डॉ. राजेंद्र शहा जी ने ही नीरज की कविता पढ़ाई थी। नेरे निर्देशक एवं गुरुदेव श्रद्धेय डॉ. राजेंद्र शहा जी ने इस लघुशोध प्रबंध के लिए नीरज जी की काव्य धारा के बारे में निर्देशन दिए और उसी के फलस्वरूप मैंने '**नीरज के काव्य की चतुःसूत्री का मूल्यांकन**' इस विषय को निश्चित किया।

आधुनिक हिंदी कविता में एक महत्त्वपूर्ण विधा है 'गीत' जिसके कवि नीरज जी सबसे महत्त्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। डॉ. बच्चन का एकमात्र अपवाद छोड़ दिया जाए तो नीरज जी जैसी लोकप्रियता अन्य किसी भी कवि को मिली नहीं यह सार्वकालिक सत्य है।

" गोपालदास सक्सेना 'नीरज' के काव्य की चतुःसूत्री का मूल्यांकन" का विश्लेषण मैंने कुल छह अध्यायों में किया है।

प्रथम अध्याय :-

प्रथम अध्याय में नीरज के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में चर्चा की है। इसमें नीरज जी की जन्म, शिक्षा. दीक्षा, उनका जीवनसंघर्ष तथा उन्हें मिले सम्मान एवं पुरस्कारों का लेखा जोखा प्रस्तुत किय गया है। 'संघर्ष' से लेकर 'वंशीवट सूना है' आदि उनके काव्य संकलनों का परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय :-

दूसरे अध्याय में नीरज के काव्य में सौंदर्यबोध का विश्लेषण किया गया है। सौंदर्यबोध नीरज के काव्य का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है, जिसे इस अध्याय के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

तृतीय अध्याय :-

तीसरे अध्याय में नीरज के काव्य में मृत्युबोध की खोज की गई है। कुछ आलोचक नीरज को मृत्युवादी कवि मानते हैं। उनके इस मत का विश्लेषण इस अध्याय के माध्यम से करने का प्रयास किया गया है! मृत्युबोध यह नीरज के काव्य की एक प्रवृत्ति है, इसके अलावा इसका कुछ और औचित्य नहीं है यह स्पष्ट किया गया है।

चतुर्थ अध्याय :-

चौथे अध्याय में नीरज की कविता में 'प्रेमबोध' पर विचार किया गया है। प्रेम जो मानवीय मूल्यों का मूलाधार है वह नीरज की कविता में किस प्रकार प्रस्फुटित हुआ है इस तथ्य का उद्‌घाटन प्रस्तुत अध्याय के माध्यम से किया गया है।

पंचम अध्याय :-

पंचम अध्याय में 'रोटी' इस अंतिम सूत्र के तथ्य को उद्‌घाटित किया गया है। रोटी जो एक साथ इंसान की कमजोरी और शक्ति भी होती है, इसका विश्लेषण किया गया है।

छठा अध्याय :-

उपसंहार के इस अध्याय में नीरज ने जो चार सत्य प्राप्त किए हैं उन्हीं सत्यों का विश्लेषण जो प्रथम पाँच अध्यायों में किया गया है उसके निष्कर्ष इस अध्याय में प्रस्तुत किए गए हैं। जो तथ्य प्रकाश में आए हैं उन्हीं तथ्यों का विवेचन इस अध्याय में किया गया है।

मेरे शोध निर्देशक श्रद्‌धेय डॉ. राजेंद्र शहा ने अपने व्यस्त कार्यभार से वक्त निकालकर भी अपना बेशकीमती वक्त मुझे देकर इस शोध कृति का एक-एक पृष्ठ देखा, पढ़ा और सुधारा! इस लघुशोध प्रबंध की समस्त अच्छाइयाँ और मौलिक उपलब्धियों का पूरा श्रेय श्रद्‌धेय डॉ. राजेंद्र शहा जी को ही है। अपनी कृतज्ञता को अभिव्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा के कार्याध्यक्ष प्राचार्य सु. मो. शाह जी ने प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध की रचना एवं वर्तनी के बारे में मौलिक मार्गदर्शन किया। उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता अभिव्यक्त करना अपना फर्ज समझता हूँ।

लालबहादुर शास्त्री महाविद्‌यालय सातारा के एम. फिल विभाग के अध्यक्ष डॉ. सगरे जी के प्रति मैं विशेष आभार अभिव्यक्त करता हूँ। उन्होंने समय-समय पर मुझे बहुत सारी हिदायतें दीं!

बाबासाहेब चितळे महाविद्‌यालय, भिलवडी के प्राचार्य डॉ. पी. बी. कुलकर्णी जी का मैं अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने मेरी हर तरह से सहायता की और साथ-साथ उचित मार्गदर्शन भी किया। उनकी प्रेरणा से ही मैं यह कार्य पूरा कर सका।

बाबासाहेब चितळे महाविद्‌यालय के ग्रंथपाल श्री खराडे व्ही. व्ही और सेकंडरी स्कूल, ज्युनि. कॉलेज के ग्रंथपाल श्री शरद जोशी, इनका मैं हार्दिक आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे मौलिक ग्रंथ देकर इस प्रयास को बढ़ावा दिया!

सांगली आकाशवाणी के मेरे मित्र एस. ए. आवटी ने भी अपनी तरफ से मौलिक योगदान दिया।

मेरे सभी सहयोगी मित्रों के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना फर्ज समझता हूँ जिनकी शुभ कामनाओं के कारण और पुस्तकों की सहायता के कारण मैं यह कार्य संपन्न कर सका।

प्रा. पराग शाह तथा सौ. प्रीति भाभी जी का मैं आभारी हूँ, जिन्होंने इस लघुशोध प्रबंध का अच्छा संगणकीय संयोजन किया!

इस लघुशोध प्रबंध कार्य में सहायक सभी लोगों का नामनिर्देशन करना संभव नहीं है फिर भी उन सब के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

और अंत में मैं पुण्यवर माताजी एवं पिताजी के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ क्योंकि यह कार्य उन्हीं के शुभाशीर्वाद से ही पूर्ण हुआ।

विद्वज्जनों के हाथों कृति देते समय केवल यही कह सकता हूँ कि मेरे इस लघु प्रयास को वैसा ही स्वीकार करेंगे जैसा गोस्वामी जी ने कहा है -

जिमि बालक कह तोतरी बाता!

सुनहि मुदित मन पितु अरु माता।।

विजय गाडे

0-0-0-0-0

अनुक्रम

प्रथम अध्याय :- नीरज व्यक्तित्व और कृतित्व

जीवनी - जन्म एवं जन्मस्थान, बाल्यकाल, पारिवारिक जीवन, छात्र जीवन, साहित्यिक प्रेरणा और आजीविका

व्यक्तित्व - जनता के प्रतिनिधि, एक आदर्श मानव, जूझारू योद्धा, साहित्यिक पहचान, सम्मान तथा पुरस्कार

कृतित्व - नीरज की कृतियों का परिचय

'संघर्ष' से लेकर 'वंशीवट सूना है' तक 12 काव्यकृतियों का परिचय!

द्वितीय अध्याय :- नीरज के काव्य में सौंदर्य

सौंदर्य की परिभाषा एवं उसका स्वरूप! नीरज की सौंदर्य विषयक धारणा सौंदर्यबोध के दृष्टिकोण आदि का विश्लेषण!

सौंदर्य बोध का विभाजन - मानव सौंदर्य एवं प्रकृति सौंदर्य!

तृतीय अध्याय :- नीरज के काव्य में मृत्यु

मृत्यु एक परम शाश्वत एवं अटल सत्य! मृत्युबोध कवि के काव्यधारा की सहज और स्वाभाविक प्रवृत्ति। नीरज मृत्युवादी कवि नहीं है! नीरज की काव्यधारा में अवतरित मृत्यु के विविध रूप एवं उनका मृत्यु की ओर देखने का दृष्टिकोण!

चतुर्थ अध्याय :- नीरज के काव्य में प्रेम

प्रेम की परिभाषा एवं उसके स्वरूप का विश्लेषण! प्रेम जीवन का परम चिरंतन मूल्य। प्रेम विषयक मनोधारणा और कवि की काव्यधारा में प्रेम का स्थान! प्रेम काव्यधारा का विभाजन -

वैयक्तिक प्रेमधारा, मानवतावादी प्रेमधारा, राष्ट्रीय तथा वैश्विक प्रेमधारा और ईश्वरीय प्रेम धारा आदि!

पंचम अध्याय :- नीरज के काव्य में रोटी

मानवी जीवन में रोटी का स्थान एवं उसका मूल्य! मार्क्सवादी दर्शन एवं गाँधीवादी दर्शन का महासमन्वय! रोटी के विविध रूप!

छठा अध्याय :- उपसंहार

पाँचों अध्यायों का समन्वित निष्कर्ष एवं नीरज जी के काव्य का मूल्यांकन।

ग्रंथ सूची!

0-0-0-0-0